अंक - 1, सितम्बर 2015

स्पन्दन

वार्षिक राजभाषा पत्रिका

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल
राष्ट्रीय महत्व का संस्थान, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
नीलबड़ मार्ग, भौंरी, भोपाल – 462 030

संस्थान गान

"नागपृष्ठ समारूढं शूलहस्तं महाबलम् ।
पाताल नायकं देवं वास्तुदेवं नम्याम्ह्यम् ।।"

उठो सुनो प्राची से उगते, सूरज की आवाज।
अपना देश बनेगा सारी दुनिया का सरताज।।

श्रद्धा अपरम्पार कि पत्थर में भी प्रीति जगाई।
ताजमहल पर गर्व हमें है, जग भी करे बड़ाई।।
उसी प्रेरणा से रच दें, हम फिर से नया समाज।
स्वागत करने को नवयुग का, नया सजाएं साज़।।

मलिन हो गई धरा आज फिर, उसको पुनः सजाएं।
हरित शिल्प से चलो सृजन का, नारा हम दोहराएं।।
सोये आदर्शों को आओ, सब मिल पुनः जगाएं।
नूतन सृजन हो शिव सृजन, दुनिया में पहुँचाएं।।

उठो सुनो प्राची से उगते, सूरज की आवाज।
एस.पी.ए. के छात्र करेंगे, नवयुग का आगाज़।।

संस्थान गीत

ढूंढ रहा था, इक नया उजाला,
फिर मिला तू, इस नयी राह में।
तू ही जिन्दगी, तू ही मंजिल,
तू ही हर खुशी, इस दास्तान में।

ये ज़मीं, ये आसमां,
और सितारे भी हैं अपने साथ।
ये अंधेरा भी टल जायेगा,
कल सवेरा नया लायेगा।

हर खुशियों में, हर मुश्किल में,
हर लबों पे बस एक ही पुकार,
जी उठे...एसपीए, भोपाल।

तेरी दुआ से, कुछ बन जाऊंगा,
तेरे नाम को, मिटने ना दूंगा।
जहां जहां पर, मेरे कदम पड़ेंगे,
वहाँ तेरा फिर, निशां दिखेगा।

ये ज़मीं, ये आसमां,
और सितारे भी हैं अपने साथ।
ये अंधेरा भी टल जायेगा,
कल सवेरा नया लायेगा।

हर खुशियों में, हर मुश्किल में,
हर लबों पे बस एक ही पुकार,
जी उठे...एसपीए, भोपाल।

श्री आर.के. जेना, हिन्दी अधिकारी एवं राजभाषा समिति के सहयोग से प्रकाशित

अध्यक्षा, अधिशासी मण्डल का संदेश

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय भोपाल की स्थापना भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा अंतर्राष्ट्रीय स्तर के योजना एवं वास्तुकार तैयार करने के लिए तथा शिक्षा में उच्च गुणवत्ता को ध्यान में रखकर की गई।

ज्ञान की इस सदी में आज यह आवश्यक हो गया है कि ज्ञान के विभिन्न प्रकार व आयाम को किस प्रकार आत्मसात किया जाय। प्राचीन काल से आज तक विकास, सम्पन्नता और सशक्तिकरण दोनों के लिए ज्ञान प्रमुख कारक रहा है।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि संस्थान द्वारा वार्षिक पत्रिका ''स्पंदन'' का प्रकाशन किया जा रहा है। संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी है व अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा को प्रचारित एवं संवर्धित करने की व्यवस्था की गई है। इस पत्रिका के प्रकाशन से संस्थान की शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं अन्य प्रकार की महत्वपूर्ण गतिविधियों का प्रकाशन एवं प्रचालन होगा। इसके साथ ही साथ पत्रिका में विभिन्न आलेख, सृजन साहित्य, कवितायें एवं संस्थान के सभी कर्मचारियों की अभिव्यक्तियों एवं विचारों का समावेश किया जायेगा।

मैं इस पत्रिका को मूर्त रूप देने में प्रयासरत राजभाषा विभाग एवं स्पंदन से जुड़े सभी शिक्षकों, अधिकारियों व कर्मचारियों को इस कार्य के सफल परिचालन हेतु शुभकामनायें देती हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

Sunita Kohli

श्रीमती सुनीता कोहली
(पद्मश्री)

निदेशक का संदेश

शिक्षा का समाज से चिरन्तन नाता है। शिक्षा ही मनुष्य को निखारती है, उसके अभ्यान्तर का परिष्कार कर उसके व्यक्तित्व को वैशिष्ट्य प्रदान करती है तथा उसके गौरव तथा मान की अभिवृद्धि करती है। इसी भाँति विश्व पटल पर उन शिक्षण संस्थानों की पहचान बनती है जो समग्र रूप से अथवा विषय विशेष में शिक्षार्थियों को पूर्णता प्रदान करती है और उनकी प्रतिभा का चतुर्मुखी विकास कर उन्हें नये आयामों पर पहुँचाती है। यद्यपि इसकी पृष्ठभूमि में मुख्य कारक तो शिक्षार्थियों की स्वयं की नैसर्गिक प्रतिभा होती है परन्तु भाषा ही श्रेष्ठ शिक्षकों–गुरुजनों के सान्निध्य, संसर्ग और मार्गदर्शन में क्रमशः उनको पल्लवित, परिमार्जित एवं संस्कारित करती है।

भारतवर्ष में गुरु–शिष्य, शिक्षक–शिक्षार्थी परम्परा तथा गुरुकुल–ज्ञान के केन्द्रों का सदैव ही गौरवमयी स्वर्णिम इतिहास रहा है। मैं आह्वान करता हूँ कि आइये हम सभी अपने संस्थान को, शिक्षक–शिक्षार्थियों के मध्य की इसी गौरवशाली परम्परा का, एक दैदीप्यमान उदाहरण बनाने के लिए उद्यत हों। हमारा संस्थान न केवल विश्वस्तर पर शिक्षण का एक अग्रणी, लब्धप्रतिष्ठ, स्पृहणीय ज्ञान–केन्द्र बने वरन् संस्थान परिसर में हमारे शिक्षकों–शिक्षार्थियों के मध्य शिक्षण के साथ–साथ संरक्षक, मार्गदर्शक व सविनय ज्ञानार्जन के उद्‌बोधन जैसे चिर–भावनात्मक संबंधों का भी विकास हो। निश्चय ही वे लोग जिनका स्पंदन से किसी भी रूप में संबंध है या जो इसमें अपना प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष योगदान देते हुए भागीदारी निभा रहे हैं, इससे एक अव्यक्त संतुष्टि अनुभूत करेंगे तथा स्पंदन को और बुलंदी प्रदान करने के निमित्त अधिकाधिक उत्प्रेरित होंगे।

मेरी प्रत्याशा है कि अपने रचनाकारों की सशक्त, विचारोत्तेजक एवं प्रेरणाप्रद रचनाओं और उनके कथ्य से यूँ ही स्पंदन समृद्ध होती रहेगी। आपके समक्ष स्पंदन की प्रस्तुति के साथ मैं पत्रिका के सभी भागीदारों का आभार व्यक्त करता हूँ तथा अपेक्षा रखता हूँ कि वे अपनी सहभागिता इसी भाँति अनवरत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

VKSingh

डॉ. विनोद कुमार सिंह
(पद्मश्री)

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय–अधिनियम

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि गत वर्ष दिसम्बर–2014 में योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल को संसद के द्वारा पारित एस.पी.ए. 2014 अधिनियम के तहत राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित किया गया। इस सम्बन्ध में 22 जनवरी 2015 को भारत सरकार द्वारा राजपत्रित अधिसूचना जारी की गई है।

रजिस्ट्री सं० डी० एल० — (एन)04/0007/2003—14 REGISTERED NO. DL—(N)04/0007/2003—14

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY
भाग II — खण्ड 1
PART II — Section 1
प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 43] नई दिल्ली, वृहस्पतिवार, दिसम्बर 18, 2014/ अग्रहायण 27, 1936 (शक)
No. 43] NEW DELHI, THURSDAY, DECEBER 18, 2014/AGRAHAYANA 27, 1936 (SAKA)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।
Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

MINISTRY OF LAW AND JUSTICE

(Legislative Department)

New Delhi, the 18*th December,* 2014/*Agrahayana* 27, 1936 *(Saka)*

The following Act of Parliament received the assent of the President on the 18th December, 2014, and is hereby published for general information:—

THE SCHOOL OF PLANNING AND ARCHITECTURE ACT, 2014

(No. 37 of 2014)

[18*th December*, 2014.]

An Act to establish and declare Schools of Planning and Architecture as Institutions of national importance in order to promote education and research in architectural studies including planning of human settlements.

Be it enacted by Parliament in the Sixty-fifth Year of the Republic of India as follows:—

एस.पी.ए. का नया कैम्पस

संस्थान जनवरी 2015 में अपने नये कैम्पस भौरी में स्थानान्तरित हो चुका है एवं सभी गतिविधियाँ पूर्णतः वहीं से संचालित की जा रही हैं। कैम्पस के विभिन्न भवनों का निर्माण कार्य तीव्र गति से चल रहा है एवं प्रतिमाह समाप्त होने की ओर अग्रसर है।

प्रथम दीक्षांत समारोह

संस्थान का प्रथम दीक्षांत समारोह दिनांक 26 मार्च, 2015 को सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। डॉ. वी. के. सारस्वत जी की मुख्य अध्यक्षता में समारोह आई.आई.एस.ई.आर. के लेक्चर हॉल में संपन्न हुआ। इस मौके पर मुख्य अतिथि के अतिरिक्त अध्यक्षा महोदया (शासी मंडल),शासी मंडल (बोर्ड ऑफ गर्वनर्स) तथा वरिष्ठ सभा (सीनेट) के सदस्य, कुलसचिव तथा निदेशक उपस्थित थे। इस दीक्षांत समारोह में 2010 से 2012 तक के बैच के 280 पूर्व छात्र–छात्राओं को डिग्री प्रदान की गई।

इन्ट्रीग्रल स्टूडियो

उज्जैन उन प्राचीन तटीय शहरों में से एक है जहाँ प्रत्येक 12 वर्ष में कुंभ का आयोजन होता है। इन्ट्रीग्रल स्टूडियो 2014 का उद्देश्य कुंभ के दौरान भाग लेने वाले तीर्थ यात्रियों की आवश्यकता के अनुरूप स्थान को तैयार करने के लिए समेकित हल प्रदान करना एवं अस्थायी बुनियादी सुविधाओं के लिए योजना तैयार करना था। इस स्टूडियो में संस्थान के छात्रों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया एवं बहुविषयक दृष्टिकोण, सामूहिक प्रतिभा एवं सहयोग को प्रोत्साहित किया जिसके परिणाम स्वरूप समाज के प्रति सहानुभूति रखते हुए उन्नत एवं समृद्ध समाधान प्रस्तुत किए गए।

प्रसिद्ध वास्तुविद फ्रैंक लॉयड राईस् के अनुसार 'Learing by Making' अर्थात् बनाकर सीखना वास्तुकला एवं डिज़ाईन के क्षेत्र में बनाकर सीखने की कला का विस्तार करता है। इसी परिप्रेक्ष्य में इन्टीग्रल स्टूडिओ 2015: ''लर्निंग बाय मेकिंग'' डिज़ाईन कार्यशाला का आयोजन दिनॉक 14–15 मई, 2015 को योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भौंरी भोपाल में आयोजित किया गया।

''लर्निंग बाय मेकिंग'' डिज़ाईन वर्कशॉप से विद्यार्थियों को उनके कार्यक्षेत्र में विभिन्न तरह के कार्यो का समावेश करने की जानकारी प्राप्त हुई।

स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर में आर्ट प्रदर्शनी

कागज, मिट्टी, कपड़े से कलाकारी

स्टूडेंट्स ने तैयार की एनालॉग प्रिंट्स डिजिटल फिल्म।

एक्जिबिशन में ओरिगेमी कला को समझाते आर्टिस्ट।

भोपाल। कला को किसी खास विचार या आकार में बांधना संभव नहीं है। ये तो विचारों की वो पराकाष्ठा है जो पेंसिल और ब्रश की कलाकारी के माध्यम से कैनवास पर उतारी जाती हैं। यह तो भावनाओं की स्वतंत्र अभिव्यक्ति है। कुछ ऐसी ही ब्रश की कलाकारी और कल्पना की उड़ान का साझा संयोग सोमवार को स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर (एसपीए) में देखने को मिला। मौका था, इंटिगरल स्टूडियो-2015 वर्कशॉप के अंतर्गत आयोजित एक दिवसीय एक्जिबिशन का। इस दौरान मिट्टी, कागज, कपड़े और लोहे जैसे हर मीडियम में अपनी क्रिएटिविटी दिखाई।

इंटीरियर के लिए 'ओरिगेमी'

एक्जिबिशन में स्टूडेंट्स की ओरसे तैयार एनालॉग प्रिंट्स डिजिटल फिल्म, वले मॉडल और ओरिगेमी के खूबसूरत नमूने देखने को मिले। एक्जिबिशन के लिए करीब 400 मॉडल स्टूडेंट्स ने तैयार किए। कुछ ने मिट्टी ने छोटे-बड़े डेकोरेटिव पॉट्स इस तरह से गढ़े कि यह इंटीरियर का डेकोरेशन एलीमेंट लगे, वहीं कुछ ने कैलीग्राफी की कला दिखाने के लिए टूथ ब्रश, मेडिकल सीरिंज, स्पॉन्ज और निब्स का प्रयोग किया। इस एग्जीबिशन को तैयार करवाने में कल्पेश गोस्वामी, आईआईटी मुंबई से एनिमेटर विजरा पचारिया, फोटोग्राफी एक्सपर्ट साकेत पाटिल, आर्किटेक्ट हरकीरत सिंह, पलाश वासवानी, निशि चौहान, बुतुल अब्बास, साक्षी गंभीर और स्वाति अग्रवाल बतौर एक्सपर्ट शामिल हुए।

इस कार्यशाला में विभिन्न विधाओं के 10 विषय–विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला में 10 तरह की विधाएं (कथांकन कला, डिजिटल फिल्म, लोक कला, ऑरीगमी, फोटोग्राफी, केलीग्राफी, मिट्टी की कला, अभिकल्पनात्मक वास्तुकला, अभिकल्पना, रेखांकन) सम्मिलित की गयी। इन विधाओं में संस्थान के लगभग 225 विद्यार्थियों ने तथा संस्थान के संकाय तथा गैर–संकाय सदस्यों ने भी ने बढ–चढ़कर भाग लिया। इस 04 दिवसीय कार्यशाला के अंतिम दिवस पर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागीयों द्वारा कार्यशाला में सीखी / बनायी गयी वस्तुओं को प्रदर्शित किया गया।

राष्ट्रीय छात्र डिज़ाईन प्रतियोगिता

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल की बहु प्रसिद्ध वार्षिक राष्ट्रीय छात्र डिज़ाईन प्रतियोगिता का आयोजन 1–3 मार्च 2014 को संस्थान के अस्थायी परिक्षेत्र खेल परिसर, मेनिट भोपाल में आयोजित किया गया। 2014 की प्रतियोगिता का विषय ''तीर्थ स्थलों में सांस्कृतिक इंटरफेस के लिए समावेशी डिज़ाईन'' रखा गया था। प्रतियोगिता में देश भर के वास्तुकला एवं डिज़ाईन विद्यालयों के 196 पंजीकरण प्राप्त हुए थे। निर्णायक दल द्वारा प्रथम 20 उत्कृष्ट प्रविष्टियों को चयनित कर क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय चुना गया।

विजेताओं के लिए पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम योजना एवं वास्तुकला विद्यालय भोपाल की अधिशासी मंडल अध्यक्षा श्रीमती सुनीता कोहली की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

बर्कले प्राइज टिचिंग फैलोशिप

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय भोपाल के "Centre for Human Centric Research" द्वारा बर्कले प्राइज टिचिंग फैलोशिप के अंतर्गत 'उज्जैनी की पावन स्थली पर सांस्कृतिक इंटरफेस' के लिए ''यूनिवर्सल डिज़ाईन'' विषय पर एक वर्ष अवधि का स्टूडियो आयोजित किया गया।

इस स्टूडियो में उज्जैन में 2016 में आयोजित होने वाले कुंभ के लिए प्रत्याशित परियोजनाओं के संबंध में 'उपयोगकर्ता आधारित दृष्टिकोण' पर ध्यान केन्द्रित किया गया ताकि हर प्रकार के उपयोगकर्ता (उम्र, योग्यता, लिंग, श्रेणी, जाति, धर्म, गरीबी, शहरी / नगरीय पृष्ठभूमि से परे) की आवश्यकता के अनुसार डिज़ाईन तैयार किया जा सके।

बर्कले प्राइज टिचिंग फैलोशिप में द्वितीय वर्ष एवं तृतीय वर्ष के पूर्व स्नातक छात्रों ने विभिन्न डिजाइन समस्याओं का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन किया। यह स्टूडियो कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के पर्यावरण डिज़ाईन महाविद्यालय के वास्तुकला विभाग द्वारा समर्थित था। योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल के अतिरिक्त यह फैलोशिप एरिज़ोना विश्वविद्यालय के वास्तुकला, योजना एवं परिदृश्य महाविद्यालय, टक्सन, संयुक्त राज्य अमेरिका, एडिनबर्ग वास्तुकला एवं परिदृश्य वास्तुकला विद्यालय, यूनाईटेड किंगडम, वास्तुकला एवं भौतिक नियोजन विभाग कम्पाला, युगाण्डा तथा मैसाच्यूसैट्स कला एवं डिज़ाईन महाविद्यालय एवं मानव केन्द्रीत डिज़ाईन संस्थान बोस्टन को प्रदान की गई है।

सम्मेलन–नोस्प्लान

16वाँ नोस्प्लान सम्मेलन एस.पी.ए., भोपाल द्वारा 26 दिसम्बर से 28 दिसम्बर 2014 के दौरान आयोजित गया था। उद्घाटन सत्र में भाग लेने वाले विशेषज्ञों में पद्मभूषण डॉ. एम.एन. बुच (मुख्य अतिथि), प्रो. अमिताभ कुंडू (मुख्य वक्ता) शहरी अध्ययन में प्रसिद्ध व्यक्ति, निदेशक प्रो. विनोद कुमार सिंह और प्रो. अजय खरे शामिल थे।

प्रो. कुंडू ने अपने मुख्य भाषण "स्मार्ट शहरों का रूप संरचनात्मक एवं अपवर्जनात्मक होना चाहिए" में स्मार्ट शहरों और भारत के जनसांख्यिकीय लाभांभा की संरचना पर विचार व्यक्त किया। इस सम्मेलन में 15 विभिन्न कॉलेजों से 600 छात्रों एवं 9 प्राध्यापकों ने प्रतिनिधियों के रूप में भाग लिया।

प्रतियोगिता–बर्कले प्राईज निबंध

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय भोपाल द्वारा बर्कले प्राईज फैलोशिप मिलने के पश्चात् संस्थान के छात्र श्री निपुण प्रभाकर एवं सुश्री सुकृति गुप्ता ने 16वें वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय बर्कले प्राईज निबंध प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया।

बर्कले प्राईज निबंध प्रतियोगिता 2015 के अन्तर्गत संस्थान के तींन छात्र क्रमशः तरूण भसीन (वास्तुकला तृतीय वर्ष) द्वारा प्रथम पुरस्कार तथा विनीथा नल्ला एवं मेघना मोहनदास द्वारा तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया गया। इस वर्ष की निबंध प्रतियोगिता का विषय ''वास्तुकला एक सामाजिक कला है'' रखा गया।

प्रतियोगिता–ट्रान्सपरेंस

संस्थान के वास्तुकला तृतीय वर्ष के छात्र स्वाधित चतुर्वेदी, विपुल जैन तथा आदित्य सिंह द्वारा राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता–''ट्रान्सपरेंस 2014–15'' में अपने कार्य ''लाईफ इन ए मेट्रो'' विषय के संदर्भ में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया गया।

प्रोजेक्ट–सिंहस्थ महाकुंभ

सिंहस्थ महाकुम्भ 2016 के कार्यो के सम्बन्ध में संस्थान के छात्रों रविन्द्र यादव एवं वेंकटेश कनिसेट्टी ने अपने सिंहस्थ के प्रोजेक्ट्स के दौरान विशेष योग्यजन व्यक्तियों के घाट पर एक शोध पत्र लिखा। इस शोध पत्र को एक अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस पैसिव लो एनर्जी आर्किटेक्चर PASSIVE LOW ENERGY ARCHITECTURE (PLEA 2015)" में भेजा। दूसरे चरण में सफल होने के बाद रविन्द्र यादव एवं वेंकटेश कनिसेट्टी ने अपना शोध पत्र 9–11 सितम्बर 2015 को बोलोनिया, इटली में प्रस्तुत किया।

इसके साथ ही इन छात्रों को सिंहस्थ महाकुंभ 2016 में ट्रेनी आर्किटेक्ट के तौर पर काम करने का मौका प्राप्त हुआ है तथा मध्य प्रदेश के नगरीय प्रशासन एवं आवास पर्यावरण मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय जी की उपस्थिति में सिंहस्थ मेला समिति के समक्ष दिनांक 30/07/2014 को प्रजेंटेशन दिया। इन छात्रों ने सिंहस्थ के विभिन्न प्रोजेक्ट्स पर उज्जैन में रहकर काम किया। इन कार्यो की रिपोर्टिंग नगरीय प्रशासन विभाग, भोपाल एवं सिंहस्थ मेला कार्यालय, उज्जैन को की गई।

एसपीए के स्टूडेंट्स को मिला सिंहस्थ प्रोजेक्ट का एक्सपोजर

PROJECT WORK स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर के दो स्टूडेंट्स करेंगे मंदिरों के रेनोवेशन पर काम।

सिटी रिपोर्टर ▶ भोपाल

स्टूडेंट्स ने लिया इनिशिएटिव

क्या करेंगे स्टूडेंट्स

वास्तुकला परिषद के विशेषज्ञों का दौरा

'वास्तुकार' के व्यवसाय को अपनाने से पूर्व वास्तुविद् को वास्तुकला परिषद में पंजीकृत होना आवश्यक है। वास्तुविद अधिनियम, 1972 के अंतर्गत भारत सरकार की एक स्वायत्त सांविधिक निकाय वास्तुकला परिषद द्वारा पंजीकरण प्रदान करने के उद्देश्य से दिनॉक 27–29 जुलाई 2015 को विशेषज्ञ समिति द्वारा संस्थान का निरीक्षण किया गया। 05 सदस्यीय निरीक्षण दल का नेतृत्व प्रो. कुलभूषण हंसराज जैन द्वारा किया गया। समिति के समक्ष वास्तुकला विभाग द्वारा प्रस्तुतिकरण प्रस्तुत किया गया।

टाउन प्लानिंग के विशेषज्ञों का दौरा

एसपीए भोपाल में आई टी पी आई (इंस्टिट्यूट ऑफ टाउन प्लानर्स इंडिया, नई दिल्ली) द्वारा मई–2015 में दौरा किया गया, जिसमे संस्थान में संचालित स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम "पर्यावरण योजना" जो जुलाई – 2013 से संचालित था तथा इसका प्रथम बैच जून 2015 में पूर्ण हुआ, को मान्यता स्वीकृत की गयी।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन–ICLAFI

एसपीए भोपाल द्वारा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन ICLAFI (International Committee of Legal Administrative and Financial Issues) का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में देश विदेश के कई प्रतिनिधियों, एसपीए दिल्ली एवं सिंहगढ़ कालेज ऑफ आर्किटेक्चर पुणे के छात्रों ने भाग लिया। इस चार दिवसीय सम्मेलन के उदघाटन दिवस की अध्यक्षता प्रो. अजय खरे ने की।

इस सम्मेलन के विशिष्ट अतिथियों में प्रो नलिनी ठाकुर, श्री गिदियोन कोरेन (अध्यक्ष, ICLAFI इसराइल), श्री नितिन सिन्हा के अतिरिक्त टर्की, स्वीडन,जर्मनी, श्रीलंका और स्लोविया के वक्ताओं–श्री तामेर गुक, डॉ.वार्नर वान, सुश्री पिरोलिक ने अपने–अपने देशों के और उनसे जुड़े उदाहरणों के द्वारा छात्रों को संबोधित किया। इस सम्मेलन का संयोजन प्रो. विशाखा कवठेकर द्वारा किया गया।

कार्यशाला–सस्टेनेबल अर्बन हैबिटेट

स्कूल ऑफ प्लानिंग एण्ड आर्किटेक्चर (एस.पी.ए.), भोपाल के प्लानिंग विभाग द्वारा 'सस्टेनेबल अर्बन हैबिटेट–हरित संरचना, भवन निर्माण व परिवहन की संरचना' विषय पर छः दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 09/03/2015 से 14/03/2015 तक किया गया। छः दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन पद्मश्री एम.एन. बुच जी; प्रो. अजय खरे, अधिष्ठाता (शैक्षणिक कार्य) द्वारा किया गया।

कार्यशाला दो चरणों में सम्पन्न हुई। प्रत्येक चरण में संबधित विषय विशेषज्ञों द्वारा हरित आधार संरचना, परिवहन, भवन निर्माण पर तकनीकी पहलुओं पर चर्चा की गई।

एस.पी.ए. के प्लानिंग विभाग व मध्य प्रदेश क्लीन डेवेलपमेंट मैकेनिज्म एजेंसी (MPCDMA) के सहयोग से 'सस्टेनेबल अर्बन हैबिटेट' विषय पर एक दिवसीय सम्मेलन का आयोजन इपको (EPCO) के सभागार में दिनांक 8 अगस्त 2015, को आयोजित किया गया।

एस.पी.ए. के बोर्ड ऑफ गवर्नर (BOG) की चेयरपर्सन पद्मश्री श्रीमती सुनीता कोहली ने इस सभा को सम्बोधित किया।

स्वतंत्रता दिवस

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी संस्थान में स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया। निदेशक महोदय द्वारा झंडावंदन किया गया। इस समारोह में संस्थान के सभी छात्र–छात्राओं ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया तथा देश भक्ति से ओत–प्रोत विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों की रंगारंग प्रस्तुति दी।

इस उपलक्ष्य में संस्थान के शिक्षक, अधिकारी व कर्मचारीगण अपने परिवारों के साथ उपस्थित थे।

गणतंत्र दिवस

26 जनवरी, 2015 को संस्थान में 66वां गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। संकायाध्यक्ष (शैक्षणिक) द्वारा झंडावंदन किया गया। छात्र–छात्राओं ने विभिन्न कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी तथा कुलसचिव महोदय भी उपस्थित थे।

इस उपलक्ष्य में संस्थान के शिक्षक, अधिकारी व कर्मचारीगण अपने परिवारों के साथ उपस्थित थे।

केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री का संस्थान में आगमन

श्रीमती स्मृति जुबिन ईरानी ने दिनांक 26 जून, 2014 को संस्थान का दौरा किया तथा सभी विद्यार्थियों, शिक्षकगणों सें विचार–विमर्श किया। इस मौके पर उन्होंने छात्राओं के छात्रावास तथा छात्रों द्वारा तैयार किया गया एस.पी.ए. गीत का भी उद्घाटन किया और भौंरी परिसर का दौरा भी किया। इस मौके पर महापौर श्रीमती कृष्णा गौर तथा विधायक महोदय श्री रामेश्वर शर्मा भी उपस्थित थे।

अंर्तराष्ट्रीय योग दिवस

संस्थान में प्रथम अंर्तराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून, 2015 को मनाया गया। इस दिवस पर आमंत्रित विशेषज्ञों ने योग के विभिन्न आसनों से संस्थान के सदस्यों व विद्यार्थियों को अवगत कराया तथा इसे दैनिक जीवन में शामिल करने का अनुरोध किया।

वृक्षारोपण

संस्थान में तहसील हूजुर के विधायक माननीय श्री रामेश्वर शर्मा के द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया जिसके अंर्तगत तहसील में 4000 पौधे रोपित किये जायेंगे। संस्थान में दिनांक 16 जुलाई, 2015 को विभिन्न किस्म के पौधों को रोपा गया।

अमेरिकी राष्ट्रपति के साथ भोज में प्रो. विनोद के. सिंह

देश के 66वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर भारत सरकार द्वारा अमेरिका के राष्ट्रपति श्री बराक ओबामा को मुख्य अतिथि के तौर पर आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर भारत के राष्ट्रपति महोदय ने मुख्य अतिथि के सम्मान में राष्ट्रपति भवन में रात्रिभोज का आयोजन किया। संस्थान के लिये यह गौरव का विषय है कि राष्ट्रपति महोदय द्वारा आयोजित इस भोज का आमंत्रण संस्थान के निदेशक प्रो. विनोद के. सिंह को प्रेषित किया गया।

स्पिक मैके

स्पिक मैके (भारतीय शास्त्रीय संगीत और युवाओं के बीच संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए सोसाईटी) की गतिविधियों के अन्तर्गत संस्थान में वास्तुकला विभाग के अन्तर्गत दिनॉक 27 फरवरी 2015 को सायं 05:30 बजे प्रसिद्ध राजस्थानी लोक गायक श्री रोज ख़ान एवं सदस्यों द्वारा ''राजस्थानी लोक गायन' विषय पर अपनी गायन की प्रस्तुति प्रस्तुत की गयी।

राष्ट्रपति ए. पी. जे. अब्दुल कलाम को श्रद्धांजलि

भारत के 11वें राष्ट्रपति श्री ए. पी. जे. अब्दुल कलाम जी के आकस्मिक निधन पर संस्थान में दिनांक 28 जुलाई 2015 को शोक सभा का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत संस्थान के सदस्यों एवं छात्र–छात्राओं द्वारा मौन धारण कर मोमबत्तियाँ जलाकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

हिन्दी पखवाड़ा 2015

प्रत्येक वर्ष की तरह संस्थान मे इस वर्ष भी हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया। इसके दौरान 1–11 सितम्बर तक हिंदी भाषा के प्रचार– प्रसार को बढ़ाने हेतु विभिन्न प्रतियोगिताएँ जैसे निबंध, सुलेख लेखन, टंकण, अनुवाद, प्रशासनिक शब्दावली, टिप्पण, वाद–विवाद, कविता–पाठ इत्यादि का आयोजन किया गया जिसमे संस्थान के कर्मचारियो व छात्रो ने उत्साह पूर्वक भाग लिया।

कविताएँ

क्या सीखा और क्या देखा मुजफ्फरनगर में?

बड़े बड़े खेतों मे प्लाटों को कटते देखा!
कटे हुए प्लाटों में मकानों को छपते देखा !
अपने ही घर मे खुद मजदूरी करते लोगों को देखा,
मेहनत की दीवारो को खून और पसीने से तराई करते देखा!
और देखा,
वो गांवों के घर को रोज याद करती अम्माओं को देखा,
कभी लौट कर ना जाने का प्रण रोज दोहराते देखा!
अब्बाओं को उस दिन की कहानी रोज सुनाते देखा,
दहशत को नफरत मे मिलते देखा, एक और मौका माँगते देखा!
आशाओं की नीव में, उम्मीदों की ईटें बिछती देखीं
फिर उस ठोस नीव में झटपट दीवारें बिछती देखी!
छोटी छोटी बातों पे लोगों को लड़ते देखा,
और बड़ी बड़ी लड़ाइयों को क्षण मे भुलाते देखा!
और क्या सीखा?
मुजफ्फरनगर मे मैने, सीखना सीखा!

निपुण प्रभाकर
बी. आर्क., आखरी वर्ष

कवर पेज डिजाइन :
कुमारी रितिका कपूर,
एम.आर्क.,कन्जर्वेशन

जीवन एक पहेली

जीवन जो एक पहेली है,
जीवन से जीना सीख रहे।
प्यास किसी की बुझी नहीं
अम्रत की भारी रिम झिम मैं,
पानी की बूँद तरसते थे,
मिला समंदर डूब गये।
प्यास तो प्यारा सपना है,
सपने हैं आज अंधेरे मैं,
सपनों का मतलब समझा दो,
आज अँधेरे से पूछ रहे।
अंजानी सी कुछ नजरें जो,
हलचल करतीं हैं नजरों में,
आगे नजरों के अँधेरा है,
प्रियतम की चाहत ढूँढ रहे।
नभचर के पंखों सी ताकत
नहीं पर्वत घोर शिलाओं में,
प्रियतम की चाहत की कशिश को,
हिमालय के हौसले से तौल रहे।
रक्त उसी की अरुणामय,
साहस है जिसके कर्मों में,
हौसले की लङी बिखरा के
पर्वत पर चढना सीख रहे।
जीवन जो एक पहेली है,
जीवन से जीना सीख रहे।

शुभांशू सिंह,
बी. आर्क., दूसरा वर्ष

दिल ए नादान

आँखों की नमी से सींचे हुए अहसास हो तुम,
पलकों में समाये सपनों का आगाज़ हो तुम...
पानी से भी निर्मल हो तुम, धरती से भी अविचल हो तुम,
अगणित बुराइयाँ है मुझमें लेकिन मुझमें रहकर भी निश्छल हो तुम...
तुम मेरे मन का आभास हो,
तुम मुझमें सच्चाई का अल्फाज़ हो ..
न रंग है तुम्हारा कोई, मजहब है पता,
लेकिन ऐ दिल में तुम्हे ही क्यूं ढूंढती हूँ बता...
तुमने थामा था हाथ मेरा, जब कोई छोड़ के जा रहा था ,
तुम ही मुस्कुराये थे धीरे से, जब कोई मेरे करीब आ रहा था...
बारिश में छुपाये, आँसू तूमने ही देखे थे,
और ठहरे पानी में तरंग भी तुमने ही देखे...
तुम बातें करते थे मेरी सांसों के सुरों से,
और मै सुरों की सजाती इन लब्जों से ..
लेकिन आज ये तुम्हारी बातों में इतनी तन्हाईयाँ क्यूँ हैं?
सबसे बातें करके भी मुझमें इतनी गहराइयाँ क्यूँ हैं?
बारिश में भीगकर भी सूखा मन तुझे पुकारता है,
दिल ऐ नादाँ तुझे हुआ क्या है?..
लेकिन अब मुझे पता है, तेरी रुठने की भी वजह है,
हो होंसले बुलंद तो तू सदा अजय है ..
खुदगर्जी भूल मन में इन्सनियत बसानी है,
जिंदगी की कीमत जिन्दा रह के चुकानी है ....

कल्याणी वानखेड़े
मास्टर इन अर्बन डिजाईन, दूसरा वर्ष

सपने

सपने तो सपने होते हैं, चाहे अच्छे हो या बुरे।
सपने तो हमेशा अपने होते हैं, चाहे अच्छे हो या बुरे।।
सपने तो जीवन की परछाई होते हैं।
सपनों से ही हकीकत की भरपाई होते हैं।।
सपनों से ही नवीन भविष्य का अगाज होता है।
सपने सच होते है, तो ही नई सृष्टि का आभास होता है।।
सपने में तो हम राजा, वैज्ञानिक और न जाने क्या–क्या होते है।
ऑख खुलते ही सपने टूटते हैं और हम वही होते है, जो हकीकत है।।
सपने जब सच में टूटते हैं, तो दिल रोता है।
पर सपनों से ही तो, हकीकत का उद्‌गम होता है।।
तभी तो सपने अपने होते हैं, पराए नहीं।
सपनों से ही तो, सब सच साकार होता है।।
सपने तो सपने होते हैं, चाहे अच्छे हो या बुरे।
सपने तो हमेशा अपने होते है, चाहे अच्छे हो या बुरे।।

रिपन रन्जन विश्वास
पुस्तकालय सहायक

स्पंदन

जो भी यहाँ आये, उसे वंदन हमारा है।
जो न कभी रुकेगा, वो स्पंदन हमारा है।।
दुश्मन से जो लड़े, और इस देश पर मिटे।
उन क्रांतिकारियों को, अभिनंदन हमारा है।
जो न कभी रुकेगा,.....
जिद करके जो बैठा है, कि कश्मीर चाहिए।
वो ये नहीं भूले वो, खुद खंडन हमारा है।।
जो न कभी रुकेगा,.....
मतभेद होंगें जग में विभिन्न सम्प्रदायों के।
जग ने जिसे पूजा वो यशोदा–नंदन हमारा है।।
जो न कभी रुकेगा,.....
दरख्त कई होंगे संसार के जंगलो में ।
है फैली जिसकी खुश्बू वो चंदन हमारा है ।।
जो न कभी रुकेगा,.....
होगी किसी की आदत, छुप कर के रोने की।
तुम यह नहीं समझना क्रन्दन हमारा है।।
जो न कभी रुकेगा, वो स्पंदन हमारा है।
जो भी यहाँ आये, उसे वंदन हमारा है।।

प्रतिभा सिंह जेना
बहु प्रवीणता सहायक

प्रथम दीक्षांत समारोह

स्टूडिओ

पतझड़

पतझड़ के पत्तो पर यूँ न चलो, इनमे छुपी कई कहानी हैं।
रास्ते और भी हैं इन रास्तों में, यह पत्ते सफरों की निशानी हैं।।
उगते सूरज देख बड़ा हुआ, रातों के संग गई जवानी है।
न रहा डाल पे अब तो क्या ? और भी जिन्दगी आनी है।।

ज्येष्ठ देखे, आषाढ़ देखे, तब कीमत सावन की जानी है
आज भादो, जब पतझड़ है, आँखों में न जाने क्यूँ पानी है ?

चलो आज पतझड़ है, वक्त तुम्हारा है, हमारी तो बीत गई जिंदगानी है।
पर याद रखो इतराते सौरभ! संसार की बस यही कहानी है।।
पतझड़ के पत्तो पर यूँ न चलो, इनमे छुपी कई कहानी हैं।
रास्ते और भी हैं इन रास्तों में, यह पत्ते सफरों की निशानी हैं।।

सौरभ तिवारी
सहायक प्राध्यापक

सहर

मंजिलों को पाना है तो
होंसला साथ रखना,
हो सकता है अभी बाकी
बहुत लंबा सफर हो।
वो मौसम जो आया
और आकर चला गया,
न जाने उसका अभी बाकी
और कितना असर हो।
घोसला उस पक्षी का
तेज हवा उड़ा ले गई,
न जाने उसका अब
कहाँ गुजर बसर हो।
उजाले अपनी आँखों के
हमारे साथ रहने दो,
न जाने किस लम्हे में
ज़िन्दगी की सहर हो।

स्वप्निल लौवंशी
कनिष्ठ सहायक

बूँदों की सीख

टप–टप करतीं बारिश की ये बूँदें, जीवन राग सुनाती है
छप–छप करतीं बारिश की ये बूँदें, कुछ सिखाती है ये बूँदें।

भर देती धरती का आँचल हरियाली से, खेतो में सोना पनपाती ये बूँदें
कहीं सैलाब तो कहीं सानंद, प्रकृति का महत्व समझातीं ये बूँदें।

कहीं चाय–पकोड़े की खुश्बू, कहीं कागज की किश्ती में बचपन
रिश्तो को निभाना सिखाती, तो कहीं टपकते पानी से बचने का संघर्ष भी कराती ये बूँदें।

न छुपा अपने भीतर कौतुहल को ऐ दोस्त, बारिश में बाहर निकल कर तो देख,
बूँदों का स्पर्श नम अनुभूति कराती है।
काले बादलों के बीच इंद्रधनुष बनाकर, गमों में भी खुश रहना सिखाती है ये बूँदें।

टप–टप करतीं बारिश की ये बूँदें, जीवन राग सुनाती है
छप–छप करतीं बारिश की ये बूँदें, कुछ सिखाती है ये बूँदें।

स्वाती बिलैया
कनिष्ठ सहायक

भारतीयता?

हम भारत के भारतवासी,
इस देश का नवनिर्माण करे,
हम युवा देश की शक्ति है,
भारतीयता का सम्मान करे!

ये दिव्य–भूमि थी देवों की,
ये देश था वीर जवानो का,,
है किस कोने में दिव्य अभी ये,
कहाँ बसा वो वीर यहाँ?

नष्ट हो चुकी गाथा राब,
अब भ्रष्ट हो चुका सारा देश,
जीवित कहा अब सच्चाई,
है बदला भारतीयता का भेष!

है जली चिता उन तत्वों की,
जो भारतीयता का दम भरते है
और उस जली हुई भूमि पे हम
सब झंडोतोलन करते है

क्या रखा उन दिखलावों में,
क्या कोई दुखी सुख पाता है,
आ करें आज कुछ ऐसा की
जो क्रांति मन में लाता है!

न मानो तुम उन कथनो को
जो बापू, बोस, सुभाष कहे,
हम मानव दिव्य कृति है,
आ खुद सही गलत आभास करें,
ना बनो भगत और राजगुरु,
न देश पे जां बलिदान करो,
पर देश हमारी शान है
इस शान का तो सम्मान करो,

धर्म क्षेत्र और भाषा पे,
मजहब पे क्यों हम लड़ते है,
और आयकर की चोरी कर,
बाबा की झोली भरते है,

हर नियम विधान है पुस्तक की
न कभी भी पालन करते है,
और सरकार हमारी घटिया है
हम ऐसी बाते करते है,

सोचें कुछ समाधान सभी का,
कुछ तो देश का काम करें
हम युवा देश की शक्ति है
इस देश का नव निर्माण करें।

बदलें भारत ऐरा की
हर व्यक्ति में भारतीयता हो
हर काम करे वो खुद का पर
वो देश की भक्ति जैसा हो

अभिषेक गुप्ता,
बी.आर्क., दूसरा वर्ष

कोशिश

चाहती हूँ संवारना, रूह को,
यही कोशिश में लगी रहती हूँ।
पाक साफ है कितनी, रूह मेरी,
इसका इम्तिहान लेती रहती हूँ।

जैसा भेजा था, खुदा ने मुझको,
वैसी ही जाऊं, इसी धुन में लगी रहती हूँ।
गर हो जाये कोई, गलती मुझसे कहीं,
उसे सुधारने की कोशिशें, करती रहती हूँ।

जो भी किया है, अब तक ऐ–मेरे खुदा,
तेरे चरणों में, समर्पित करती हूँ।
सही किया, गलत किया मैंने,
जो भी फैसला हो तेरा, मैं कुबूल करती हूँ।

रेनु पाठक
पुस्तकालय सहायक

उसके अपने

रोज देखता हूँ सड़क किनारे बैठे
उस बूढ़े आदमी को,
उसकी झुर्रीदार चेहरे के पीछे उसकी जवानी को
उसकी नम आंखें रोज
'उसके अपनों' का इंतजार करती हैं
अपनों की याद में निरंतर नीर बहाया करती हैं

उस बूढ़े को देखकर मुझे उस पेड़ की याद आती है
जिसने अपनी जवानी में खूब फल दिया
'उसके अपनों' ने उसकी छांव में खूब विश्राम किया
आज वही पेड़ बूढ़ा, असहाय व जर्जर है
उसे 'उसके अपनों' की आस निरंतर है

कुछ–दिन में यह पेड़ भी टूट कर गिर जायेगा
पर कटते–कटते भी अपनों के ही काम आयेगा...
कटते–कटते भी अपनों के ही काम आयेगा.....

आनन्द किशोर सिंह
अनुभाग अधिकारी

अभिव्यक्तियाँ

पारस पत्थर

बूढ़ी दादी माँ अक्सर पारस पत्थर वाली कहानी सुनाया करती थी "एक बहुत गरीब आदमी था। अचानक उसे कहीं से पारस–पत्थर मिल गया। बस फिर क्या था! वह किसी भी लोहे की वस्तु को छूकर सोना बना देता। देखते ही देखते वह बहुत धनवान बन गया।" बालक कब का बचपन की दहलीज लांघ कर जवानी में प्रवेश कर चुका था किंतु जब–तब किसी न किसी से पूछता रहता, 'आपने पारस पत्थर देखा है?'

उसे इस प्रश्न का प्रायः उत्तर मिलता, 'नहीं!'

आज भी उसने एक व्यक्ति से फिर वही प्रश्न किया तो आशा के विपरीत उत्तर पाकर वह दंग रह गया।

'हाँ, मैंने देखा है। मेरे पास है।'

'आपके पास है ? कहाँ है, दिखाइए?'

'तुम्हें विश्वास नहीं हो रहा?'

'जी, मुझे विश्वास नहीं हो रहा!' उसने जिज्ञासा दिखाई।

उस आदमी ने अपने दोनों हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा, 'बस यही हाथ हैं पारस पत्थर। मेहनत करो इनसे और कर्मयोगी बनो।'

उस आदमी की बात सुनकर उसे लगा जैसे सचमुच उसे 'पारस पत्थर' मिल गया हो। वह मन ही मन खूब मेहनत करने का संकल्प करते हुए अपने दोनों हाथों को निहारने लगा।

अशोक कुमार मिश्र
पुस्तकालय सहायक

वृक्षों का महत्व

दशकूपसमा वापी दशवापीसमो ह्रदः ।
दशह्रदसमः पुत्रो दशपुत्रसमो द्रुमः ॥
(मत्स्य पुराण 154:512)

अर्थ : एक तालाब दस कुओं के बराबर होता है
एक जलाशय दस तालाबों के बराबर होता है
एक बेटा दस जलाशयों के बराबर होता है और
एक वृक्ष दस पुत्रों के बराबर होता है।

पेड़ हमारे जीवन के लिए उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितनी की हमारी साँसे। इन पेड़ों का मानव के ही नहीं बल्कि जीव–जन्तुवों के जीवन में भी प्रभाव पड़ता है। इन पेड़ों से सब जीवित प्राणी और पशु–पक्षियों को ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। इन पेड़ों से हमारा वातावरण हरा–भरा रहता है। इन पेड़ों के बहुत उपयोग हैं। पेड़ वर्षा का भी कारण बनते हैं और ये सूखा और बाढ़ रोकने में भी मदद करते हैं। इन सब उपयोगो को जानते हुए भी आज के समय में हम इन पेड़ों का मूल्य भूलते जा रहे हैं। हम प्रतिदिन इन पेड़ों को काटते जा रहे हैं। पेड़ों को इस तरह कटते रहने से हमारे जीवन में बहुत दुष्प्रभाव पड़ रहा है। इन पेड़ों के कम होते जाने के कारण वातावरण में बहुत बदलाव आया है। इनसे हमारी नदियाँ सूखती जा रही हैं।

ये पेड़ हमें उपजाऊ धरती ही नही बल्कि हमारी संस्कृति को भी बचाये रखते हैं तो हमें इन पेड़ों को कम होने से बचाने के लिए ठोस कदम उठाने चाहिये ताकि अपना वातावरण हरा–भरा रख सके।

इन पेड़ों से हमे कई तरह के पदार्थ मिलते हैं जैसे की रबड़, पुस्तको के कागज, गोंद, दातुन आदि। इन पेड़ों से हमे कई तरह की जड़ी–बूटियाँ भी मिलती है जो हमारी बीमारियों के लिए उपयोग में आती है। ये पेड़–पौधे जानवरो और छोटे जीवो के लिए घर का काम भी करते है। इन पेड़ों के उपयोगो को देखते हुए हम कह सकते है की यह हमारे जीवन के लिए अमूल्य है।

एक बेटा एक ही परिवार का देखभाल करेगा। लेकिन एक विशाल वृक्ष जीवन के घेरे में दस परिवारों का खयाल रखने में अपने भूमिका निभाता है। इस तरह वृक्षों का महत्व एक बेटे से दस गुना अधिक है।

एस श्रीनिवास राव
निज सहायक

संघर्ष

पबित्र घर की सबसे छोटी संतान था। उसका एक बड़ा भाई और एक बहन थी। पिता एक गरीब कृषक थे। अपने दो कमरे के घर के सिवा और कुछ नहीं था। बड़े कष्ट से परिवार के लिए दो वक्त की रोटी जुटा पाते थे। गरीबी की कारण बड़े बेटे और बेटी की पढाई बंद करनी पड़ी। इन सब परेशानियों के साथ पिता कभी भी मायूस नहीं हुए थे।

बचपन से पबित्र ने इन परेशानियों के सामने कभी हार नहीं मानी थी। गाँव के विद्यालय से दसवीं की पढाई खत्म हुई। कक्षा एक से दसवीं तक अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करता था। वह विद्यालय के हर शिक्षक का दुलारा था। आगे की पढाई के लिए गाँव के पास कोई इंटर कॉलेज नहीं था, 40 कोस दूर कॉलेज में नाम लिखाना था। तब भी वो उम्मीद नहीं खोया था। पिता के चेहरे को देख के ही उसके मन में संसार की सारी उम्मीदें जग उठती थीं। उसको पता था रोज कॉलेज जाने के लिए बस का किराया 15 रुपया चाहिए। कॉलेज खुल गया सारे दोस्तों के साथ वो जाने लगा। सुबह घर से कुछ नाश्ता करके 7 बजे निकल जाता था और शाम 6 बजे वापस आता था। कभी पिता बस किराया दे पाते थे कभी नहीं। कभी बस का कंडक्टर किराया नहीं होने के कारण उतार देता था। कभी–कभी उधार करना पड़ता था। कुछ दोस्त उधार मांगने के डर से उससे दूर रहते थे। जैसे तैसे करके दो साल की पढाई खत्म हो गयी। कॉलेज के 256 छात्रों में से 27 प्रथम श्रेणी में पास हुए, पबित्र का स्थान कॉलेज में 7वां था।

परीक्षा परिणाम के बाद फिर आगे की पढाई की चिंता पबित्र को सताने लगी। पिता इस बारे में बात करने के लिए हिम्मत जुटा नहीं पा रहे थे। उस समय बड़े भाई ने बोला की तुम बी.एस.सी. में नाम लिखवा लो। मैं मजदूरी करके तुम्हारी पढ़ाई का खर्च उठाऊंगा। इस तीन साल की पढाई के दौरान पवित्र बहुत बार बस का किराया न होने से कॉलेज नहीं जा पाता था। कुछ दोस्त अन्दाजा लगाते थे कि लड़का बिगड़ गया। लेकिन इसका फर्क पबित्र को नहीं पड़ता था। वो अपने लक्ष्य की तरफ भाग रहा था। आखरी वर्ष में, अचानक एक दिन पबित्र के पिता बीमार पड़े और अगले दिन उनका देहांत हो गया। पबित्र के पिता ने अपनी मृत्यु के चन्द पल पहले इशारे से उसको पास बुलाया और अपनी आँखों से उसको इशारे इशारे में बताया की बेटा तुम्हे आगे बढ़ना है।

पिता के गुजर जाने का बाद पबित्र के हाथ, पैर और मन बिलकुल थम गया था। पर अगले ही पल उसने पापा के अंतिम क्षण के इशारे को याद किया और फाइनल परीक्षा के लिए दृढ़ निश्चय कर लिया। सन 1995 में वो प्रथम श्रेणी में बी.एस.सी. में उत्तीर्ण हुआ। आगे की पढ़ाई उसके लिए चुनौती बन के खड़ी हो गयी। घर से 100 कोस दूर विश्वविद्यालय में नाम लिखवाना था, पर धन की कमी से उस साल सम्भब हो नहीं पाया। उसी साल अपनी पढाई के लिए और घर की मदद के लिए ट्यूशन पढ़ाना शुरू किया। अगले साल फिर अपनी एम.एस.सी. डिग्री की प्रवेश परीक्षा के लिए फॉर्म भर दिया। प्रवेश परीक्षा में पास हो गया और नाम भी लिख गया । शुरुआत के दिनो में उसको पैसो की कमी पड़ी थी, लेकिन वह शहर में अपनी जरुरत के लिए ट्यूशन पढ़ाने लगा। जैसे तैसे कर के अच्छे नंबर से M.Sc. पास हो गया। उसके बाद पबित्र को आगे की पढाई करनी थी, लेकिन घर की जिम्मेदारियो ने उसका रास्ता रोक दिया।

बड़े मुश्किल से वो यूजीसी परीक्षा के लिए फॉर्म भर दिया और गाँव में फिर से ट्यूशन पढ़ाने लगा। यूजीसी परीक्षा की चिठ्ठी आ गयी। परीक्षा देने के लिए पबित्र को कम से कम 200 रूपए की जरुरत थी, मुश्किल से वो 100 रूपए जुटा पाया था। किसी से उधार मांगना उसको कतई मंजूर नहीं था। पबित्र ने सोच लिया परीक्षा के एक दिन पहले वो 100 कोस का रास्ता पैदल तय करेगा, और उसने ऐसा ही किया। कुछ दिन के बाद यूजीसी का परीक्षा परिणाम आ गया और पबित्र का जे.आर. एफ. में चयन हो गया था। वो समझ नही पा रहा था, कि उसने कभी अपने गाँव से बाहर जाने का सपना तक नहीं देखा वो कैसे राज्य के बाहर जायेगा। वहीं शोध में योगदान देने के लिए उसके पास बहुत सारी संस्थाओं से चिठ्ठियां आयी। माँ को पूछा तो वो बोली बेटा तू चला जा, तेरी कामयाबी पिताजी जीते जी देख न पाए, कम से कम ऊपर से देख कर खुश होंगे। माँ की अनुमति के बाद पबित्र घर से निकल पड़ा, शोध पूरा करके एक राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त संसथान में पदार्थ वैज्ञानिक बन गया। इतने संघर्ष से अपना मुकाम पाने के बाद भी पवित्र एक निराडम्बर, स्पष्टवादी, निर्विवाद एवम निर्लोभ जीवन निर्वाह करता रहा।

राजेंद्र कुमार जेना
सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष

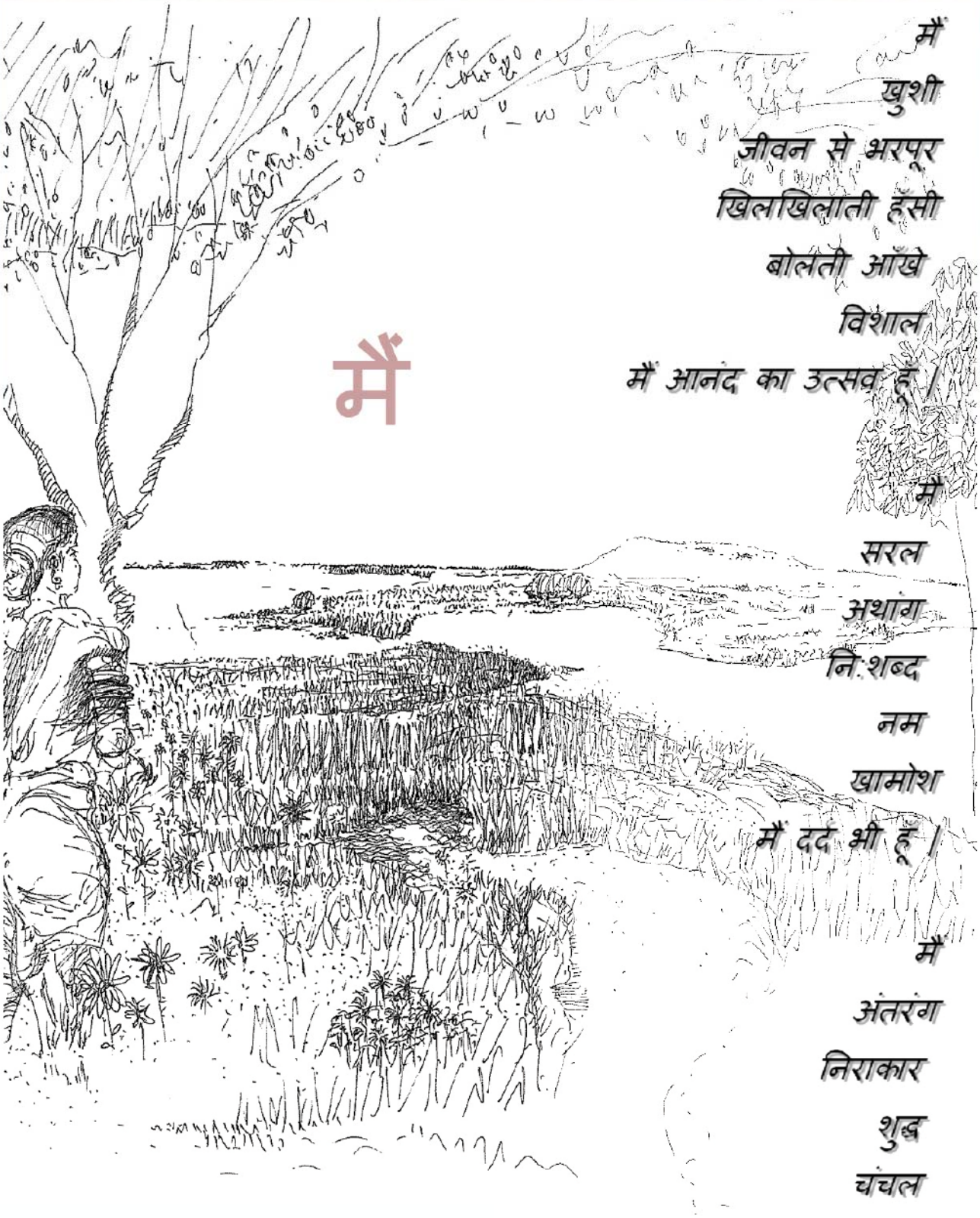

मैं

मैं
खुशी
जीवन से भरपूर
खिलखिलाती हँसी
बोलती आँखे
विशाल
मैं आनंद का उत्सव हूँ।

मैं
सरल
अथांग
निःशब्द
नम
खामोश
मैं दर्द भी हूँ।

मैं
अंतरंग
निराकार
शुद्ध
चंचल
कोमल
सिर्फ एक अहसास हूँ।

कविता : **डॉ. विशाखा कवठेकर**
सह प्राध्यापक
चित्र : **सौरभ पोपली**
सहायक प्राध्यापक

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय भोपाल, मध्य भारत के झीलों के शहर भोपाल में स्थित है। संस्थान के प्रतीक चिन्ह की पृष्ठभूमि में मालवा वास्तुकला का अर्थ समाहित है, जो कि मालवा सल्तनत की राजधानी मांडू में स्थित नीलकंठ महादेव मंदिर के सामने 'महादेव' के प्रतीक एक शंखनुमा घुमावदार जलवाहिका है। भक्तजन पुष्प को पूर्ण आस्था के साथ अपनी इच्छापूर्ति हेतु इसमें अर्पित करते हैं। जलवाहिका में प्रवाहित जल, पुष्परूपी इच्छा के साथ जीवन के संघर्ष एवं ध्येय की सफलता का संकेत देता है। जो कि वास्तुकला का अभिन्न अंग एवं School of Planning and Architecture, स्वरूप का प्रतीक है। संस्थान के प्रतीक चिन्ह में शंखाकार रूप में दर्शित 'S' अग्नि 'P' वायु तरंग एवं 'A' पानी की बूंद प्रदर्शित करती है प्रतीक चिन्ह के नीचे संस्कृत में लिखा श्लोक 'स्थपतिः स्थापनार्हः स्यात् सर्वशास्त्रविषारदः' श्समरांन्गना सूत्रधार से उद्दृत है जिसका अर्थ है कि वास्तुकार को वास्तुकला के साथ सभी विषयों का ज्ञाता होना चाहिये, प्रतीक चिन्ह का उद्देश्य छात्रों को वास्तुकला के साथ-साथ सर्व विषयों में पारंगत कर भविष्य में एक नये आयाम के लिये तैयार करना है।

SCHOOL OF PLANNING AND ARCHITECTURE BHOPAL

स्थपतिः स्थापनार्हः स्यात् सर्वशास्त्रविशारदः

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल

(राष्ट्रीय महत्व का संस्थान, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार)

परिसर : नीलबड़ मार्ग, भौरी, भोपाल - ४६२ ०३०

वेब : www.spabhopal.ac.in

अनुपम मुद्रण # 9425025574